

ASHA ARCHIVES

3387

१५९
अष्टमी पूजाविधि

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ अष्टमिष्टुजा विधिः॥ मानकमक
तां वीयेतानलाचके॥ आवमनः॥ धनुमूलन्यासयाये॥ धू
तथने॥ दुशानसनाईदेवथियावतये॥ अष्टमेतवराह
काये॥ अष्टकाये॥ स्थिगेभवमहादेवि देवा नो मनुजा
धियः॥ यावद्दशमित्यर्थं नंतोवत्त्वं स्थिरमाचरेत्॥

क॥ श्यवगोत्रात्मन् यथा कामफलं वा विकामनार्थं चर
स्थाय्यस्थिरो भव ॥ ३ ॥ तामसीने ॥ धाराप्रतिष्ठा ॥ देवया
न ॥ ओं श्रीं क्रीं ३ ॥ देवता नया च के सा दु दु ॥ यं चा मृतनं ॥
दं दना ह्ये स्या मा ॥ जं जं का ॥ कर्णयता यं च यता ॥ अदुवा
का पद्या उग्र ॥ मालको तये ॥ ० ॥ जलसोधन आचमन
३ ॥ अर्घ्यं स्थापन ॥ द्वारदेवता पूजा ॥ आसन पूजा ॥ सूर्या

र्घ्यं ॥ गुरुमदल पूजा ॥ न्यास याये ॥ शंख स्थापन ॥ पू
जा भस्मोधन ॥ तीर्थनेत्रे यमोधन ॥ वात्र स्थापन ॥
आत्मपूजा ॥ गुरु तर्पण ३ ॥ शिरस पूजा पूजे ३ स्थिति जुष्ट
नित्यकर्म ध्ये याये ॥ मोह निस्थापन याये ॥ नृलै पूजा
महनीम ॥ धूपथने देव आवाहन ॥ यं च वलि विये

शङ्खये ह्यये॥ मुद्रा के ने॥ न्यासः याये॥ ध्वज नित्य
कर्म ध्ये मालक धूजा याये॥ जय याये थायत॥ ॥
विशेष धूजा॥ न्यास याये॥ धूजा याये॥ ह्रीं आधार श
क्त्यादिभ्यो नमः॥ ऐं यन्मासनाय नमः॥ सिंहासनाय
नमः॥ ऐं महासनाय नमः॥ सुं भासनाय नमः॥

नि सुं भासनाय नमः॥ ध्यान तये॥ ऐं हे मवर्णा त्रिने
त्रा च भुजा दश भारिणी आरु ह हसिं स्थित्वा महि
का सुर घातिनी ध्यान पुष्प नमः॥ आवाहन मुद्रा के
ने॥ या घादितये॥ चंदनादि ह्यये॥ धूप दीप॥ त्रैवे य
ह्यये॥ तर्पण ३॥ ऐं हसक्रे स्यात् हा उग्र च णा देव्यै न

ये ध्यामि नमः॥ ३॥ पुनराचमनीयं नमः॥ त्रयो जलि॥
ॐ श्री गणपदे हस प्रे ३५ चणोरि पुमर्दनी हूं के सदा
रक्ष रक्ष त्वो मां जुं सः मृत्यु हरे नमः स्वाहा श्री गुरु च ५
गा दे ये श्री पादु को पूज या मि नमः॥ ३॥ वलि॥
ॐ अ ओं ह्रं चणदि गणे भ्यः श्री पादु को पूज या मि

नमः॥ ३॥ वलि॥ ॐ यन्मासनाय नमः॥ सिं हासना
य नमः॥ ॐ महि षासनाय नमः॥ त्रयो जलि॥ ॐ ह्रीं
श्रीं हस प्रे हसौं ह्रीं सः दुर्गे चणो कात्यायणे पादु को
पूज या मि नमः॥ ३॥ वलि॥ यन्मासनाय नमः॥ सिं
हासनाय नमः॥ ॐ महि षासनाय नमः॥ त्रयो जलि॥

सैं ह्रीं श्रीं हसं कं हसौं हरक्षमलः वरयूं भगवती का
त्पाय रणे तुं बुरे भवरी देवी श्री पाडु का पूजया मि नमः॥
बलिः॥ सैं हं जयादिगरो भ्यो नमः॥ ३॥ बलिः॥ अं वः
पारापादिभ्यो श्री पाडु का पूजया मि नमः॥ ३॥ बलि
क्षो क्षत्रया लाय नमः॥ बौ वदुःक नाथाय नमः॥ गौं

गणाय नमः॥ यों योगि नी भ्यो नमः॥ बौ मुरागये
नमः॥ बली॥ सैं लुंड डादिद शब्दो कपाले भ्यो नमः॥ ३॥
बलि॥ सैं ज्वा लाय नमः॥ सैं तीर रणाय नमः॥ सिद्धि ल
क्ष्मी पूजा॥ ३॥ बलि॥ क्षो क्षत्रया लाय सर्व कामदाय
श्री पाडु का पूजया मि नमः॥ बलि विधे॥ सैं क्षत्र सिं

हरदीपाय अगस्त्यवालाय वलिंगुद्रस्वाहा॥
ॐ अँ भौं अमितांगादिदिभ्यः वलिंगुद्रस्वाहा॥
सूनायाये॥ प्रेतासनाय नमः॥ ॐ हूँ महाकात्याय
श्रीपादकां पूजयामि नमः॥ ३॥ वलि विये॥ ॐ हूँ
महाकात्याय सर्वसंकष्टमर्दनाय नमः॥ वलि॥

ॐ अँ आँ कवर्गादिहेतुकमहाभैरवादिभ्यः वलि
गुद्रस्वाहा॥ ॥ ॐ ह्रस्वैर्वा सुणाय सर्व
शक्त विधुं सनाय नमः॥ ३॥ वलि विये॥ ॐ अँ
कँ चँ टँ तँ यँ शँ वृक्षारण्यदिभ्यः वलिंगुद्रस्वाहा॥
ॐ च ह्यनक्षत्रवालाय वलिंगुद्रस्वाहा॥ ॥

स्वजय जा ॥ मूलं ३ ॥ ॥ पुष्पक सिंघु जा ॥ ह्रीं कुम्भा
राउ भैरवाय नमः ॥ ३ ॥ बलि ॥ ॥ कलशाय जा ॥
है आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ है वृषासना
य नमः ॥ त्रयांजलि ३ ॥ है जुं संमृत्युं जयाय अमृती
स्वशैशक्ति स हिताये पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ ॥

बलि ॥ ॥ थापिंकुमय जा ॥ है कारसनाय न
मः ॥ है ह्रीं श्रीं हसके रसौं सहस्रवल्लवरयी कुल
कुंभाय श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ ॥ बलि ॥ मूलं ३
हृजा ३ ॥ बलि ॥ है सर्वचरभ्यो नमः ॥ है दशकलाये नमः ॥
है द्वादशकलाये नमः ॥ है ह्रीं दशकलाये नमः ॥ बलि ॥

सुगं धौष्ट्या ॥ रें अस्वस्थामादिभ्यो नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥
असात्याष्ट्या ॥ जैनों स्थानगरीशाय नमः ॥ चौं मु
राष्टये नमः ॥ हसकें उग्रचराष्टये नमः ॥ रें सर्वे भ्य
राय नमः ॥ हूं नृत्त्ये अराय नमः ॥ रें क्षीं वीं हूं मंके
अर्थे नमः ॥ भौं भीं हूं नी मे अराय नमः ॥ वलि ॥

वेकं कं तालाजुष्ट्यादिमालकसकतां मूलमन्त्र
मंष्ट्या ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ वलिविये ॥ क्षां क्षत्रया
लादिभ्यो वलिं गृह्णस्वाहा ॥ हूं महाकालाय व
लिं गृह्णस्वाहा ॥ हूं कनवीरशमशानाय व
लिं गृह्णस्वाहा ॥ रें सर्वे भ्यो देवेभ्यः वलिं गृ

ॐ २ स्वाहा ॥ ॐ महोयतागदेवो वलिंगं २ स्वाहा ॥ स्व
के सिद्धि लक्ष्मी देवो वलिंगं २ स्वाहा ॥ ह मयै उग्र चः
गादेवो वलिंगं २ स्वाहा ॥ अं व साखादि जयादि
रुड च सादि सर्व धरि वारिभ्यः वलिंगं २ स्वाहा ॥
ममययं चां कुश अनित पात्र वनि हायके ॥ ॐ श्री

श्रीं ह मयै ह मौं श्रीं स्त्रीं ह स्वस्थान क्षत्रपाल श्रवदु
की विष्णु राजकः ॥ योगिनी वायुयुक्ता दिभूती नीभूत
प्रेतकाः ॥ उद्धिष्ठ नाथ कुष्माण्ड विसा च डाक डाकि
नी देतान मक्ष गंधर्व उरगो गणगक्षसः ॥ बालय
ह युवा वायि वृद्ध वृद्ध उग्रयहा ॥ श्मशानां शाशु

सिद्धि व

भगवत्



आदि



कलस

व

व

व



ASHA ARCHIVES
3387

चिस्थानवासिरोहरिशंकरः ॥ भैरवागणमात्रादिदि
ग्विदिग्यामिनः ॥ ते सर्वे न तृप्यन्ते अत्रैव वल्लि क
र्मणि ॥ आयुर्देहि पशुं देहि पुत्रा देहि तथैव च ॥
धनविद्याय शो देहि सर्वशान्तिं कुरु वलिं गृह्ण
स्वाहा ॥ विदुतये नमः ॥ ला हा त सि ये ॥

चंदन. सिंदूर. अक्षत. पुष्प. धूप. दीप. नै
वेद्य. कल. गवय. ग्वाल. मानक. मृ. कां. छाये
तर्पण. याये. ॥ रूं. हीं. स्त्रीं. हूं. कूं. म. हो. य. ता. रा. दे. वी
श्री. वा. पु. कां. त. र्प. या. मि. न. मः. ॥ ३. ॥ स्व. प्रे. सि. दि. ल
क्ष्मी. दे. वी. त. र्प. या. मि. न. मः. ॥ ३. ॥ ह. स. प्रे. उ. ग्र. च. रा. दा.

दि. सर्व. वी. रि. व. रि. वी. र. भ्यः. श्री. वा. पु. कां. त. र्प. या. मि
न. मः. ॥ ३. ॥ अ. धी. या. तं. स्व. दे. व. या. त. त. ये. ॥ रूं. यु
न. रा. च. म. नी. यं. न. मः. ॥ ॥ ता. य. हो. ले. स. क. स्था. नी. ॥
रूं. सु. प्र. ति. स्था. व. रा. दा. भ. व. तु. ॥ ॥ ज. य. या. ये. ॥
मूल. १०. ॥ सि. दि. ल. क्ष्मी. या. गुं. या. ये. ॥ आ. ५४. ॥

ॐ हसक्रे स्वाहा १०८ ॥ ॐ ह्रीं स स्वाहा ॥ २७ ॥
ॐ हरक्ष मलवरयुं स्वाहा ॥ २८ ॥ ॐ इंदु जयं गु
हा स्वाहा ॥ ॥ मण्डलदयके ॥ नोत्रयाये
घंठ दमरु धारये ॥ मालकनित्य यायुवीने ॥

ॐ जयंती मंगला कालि भद्र काली क पालि
नी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधाम नो
मुते ॥ अथ राक्षसहस्वा निवीने ॥ अस
मत स्मरदी य मरु हनी पूजन विधौ तत्
नर्व्य वरिष्ठो मरु ॥ सकस्यानं वृजायाये ॥

नमस्कारयोगे ॥ दक्षिणाक्षये ॥ कर्पूरदीपद्वयके ॥
सखसङ्घायि विद्ये के सकला ॥ मृत्नाचार्य्यवृज नै गुरु
दक्षिदक्षिणो नै ॥ देवत वैरा मूलं ३ ॥ ॥ शंख
कलं खन हाये पवत सकल स्मार्तः ॥ चंदन तिथे ॥
मंदरापात्वां बुधे ॥ आसति काये ॥ आचमन ३

सूर्यसाहिभाये ॥ आकाशपयोत्रा अस्मत् सकल
यस्त्रिवा एतां सर्व शक्रदाय च खजसिद्धि जय प्राप्ति का
मः सारदीयमहाष्टमी यावत् एष जथा शक्ति पूजनं
पूरां धै कृतं कर्म शादिरा श्री सूर्या र्धं नमः ॥ ७
व्यं नमः ॥ ॥ देव विसर्ज न जाये मतिव ॥ ॥

विहावमाव समयप्रदाकाये ॥ ॥ इति अथ
मियाविधिः ॥ ॥ नवमियाविधिः ॥ मानक
सरा नाम तालाचके ॥ अथमिदं कुर्यात्पु
जायाये जपस्तोत्रं धुनकाव ॥ वृषि पूजा ॥

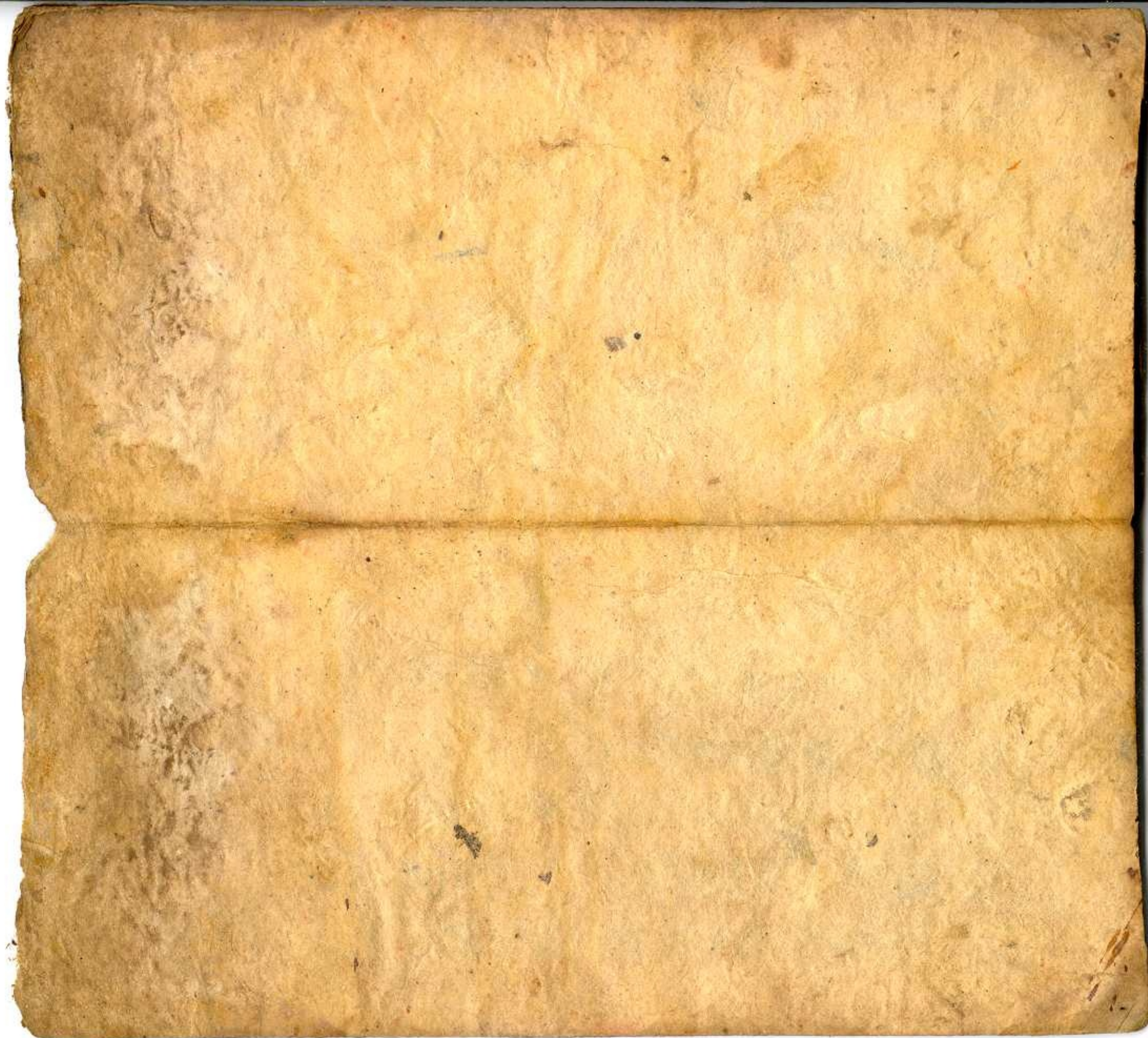
लेखनसिलावकीये फट् धर्क ॥ श्री स्वातये ॥ व
जा ॥ ऐं कालीरुं श्रीं महाकालि वने श्री लोहदरा
यनमः ॥ ३ ॥ श्रीं नारीश्वर्ये नमः ॥ श्रीं लक्ष्मी नाराय
णाय नमः ॥ श्रीं श्री भुवनेश्वराय नमः ॥ श्रीं ना
रैये नमः ॥ श्रीं अक्षोभ्यः नैरवाय नमः ॥ श्रीं उग्रच

गणये नमः ॥ नैवेद्यं दद्यात् ॥ जप ॥ स्तोत्र ॥ खड्ग
खड्गनासा ~~व~~ शक्ति कार्या मत त्थर ॥ व भुक्ते दया शीघ्रं
खड्गनाथ नमो स्तुते ॥ ॥ हुं हुं हुं ॥ नं ल धा ल चो ये
अर्घ्या यार्ज स्वन ~~ने~~ हाये फरु धर्क ॥ चतुः सत्का
र्याये ॥ स्तोत्र न ॥ ये १० रं १० वं १० मूल ३ ॥ स्तोत्र

चतुः सत्का ॥ पुष्प ॥ धूप ॥ दीप नैवेद्यः ॥ संपूर्ण विन
मः ॥ ३ ॥ पूजा ॥ मूल मंत्र कने ॥ मूल मंत्र पूजा ३ ॥
संकल्प द्याये ॥ अथ कार्या ॥ काश्यप गोत्रात्मतम्
मम कल्यारि वाणां सर्व शत्रु क्षय त्वत्पद गमि
हि जय प्राप्ति कामः सारदीये महान वैष्णवा

वर्णा ^{जा} कर्मणि श्री. ता. उग्र चरुयै सागं भ्यः सग
तामरिवारिभ्यः इदं हं सं ह्यंगं वहि देवतं वनि त्वे न
तु भ्यमह उरु सृजेता ॥ तोलते ॥ मू हाय के ॥ द हि
सा सृये ॥ हा पो हं स स्याये ॥ मत होय के ॥ ॥
कुमारी पूजा ॥ ॥ वलिया चतया वनित्य कर्म थ्ये

मालक पूजायये ॥ वी शेष को मारी यामंत्र ॥ ऐं चं
हं जं रं नं कमल वनयी श्री को मारिका विचे स्वा
हा श्री वादु को पूजायामि नमः ॥ ३ ॥ अं व ह्यारणा दि
भ्यो नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ चंदना दि ह्यये धूप दीप नेवे
द्य मालक ह्यये ॥ त वर्णा ॥ ता य हो ले से क स्या नी ॥





ASHA ARCHIVES

3387

१५९
अष्टमी पूजा विधि